PHILOSOPHY

Hons., Paper III (Part-II)

Perfectionism (आत्मपूर्णतावाद)

Dr. U.K. Singh
Mob.-9431449952

→ आत्मपूर्णतावाद के अनुसार बुद्धि और भावना दोनों ही मनुष्य के आवश्यक अंग हैं। इसलिये बिना बुद्धि के या बिना भावना के मनुष्य पूर्ण नहीं हो सकता। बुद्धि और भावना में आवश्यक संबंध है। इसलिये दोनों का विकास अर्थात् संपूर्ण स्व (Self) का विकास ही शुभ है। संपूर्ण स्व की पूर्णता या विकास का अर्थ है- मनुष्य की सभी क्रियाओं की पूर्णता। मनुष्य की क्रियाएँ शारीरिक और बौद्धिक दोनों होती हैं।

→ आत्मपूर्णता मनुष्य के व्यक्तित्व पर जोर देती है। अपने व्यक्तित्व को ~~इस~~ विकसित कर पूर्ण बनाना ही जीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिये। आत्मपूर्णता आत्म-सिद्धि (Self-realisation) के द्वारा प्राप्त होती है, अतः यही नैतिक आदर्श है। आत्म-सिद्धि मनुष्य की हर प्रवृत्ति को तुष्ट करने से ही संभव है।

→ आत्मपूर्णतावादी मत आदर्शवादी (Idealistic) है। इसमें सुखवाद की भाँति केवल इच्छा की तुष्टि या कांट के बुद्धिवाद की भाँति विवेक का आदेश-पालन ही नहीं, अपितु संपूर्ण स्व की तुष्टि करनी जाती है। ~~इच्छाओं का भी~~

→ मानव व्यक्तित्व में बुद्धि के साथ भावनाओं अर्थात् इच्छाओं का भी महत्त्व है। आत्मसिद्धि में इच्छाओं को बुद्धि के अधीन कर उसके नियंत्रण में तुष्टि करने से पाशविक आत्मा और बुद्धिमय आत्मा - दोनों की सिद्धि होती है। इससे संपूर्ण स्व सिद्ध होता है। इसलिये जहाँ सुखवाद का सिद्धान्त है- 'आत्म-तुष्टि' (Self-gratification), बुद्धिवाद का सिद्धांत है - 'आत्म-बलिदान' (Self-sacrifice) तथा आत्मपूर्ण आत्मपूर्णतावाद का 'आत्म-सिद्धि' (Self-realisation)।

Scanned with CamScanner

→ इस प्रकार सुखवाद की आत्मतुष्टि में आत्मा का अर्थ है - पाशविक आत्मा, बुद्धिमय आत्मा नहीं। बुद्धिवाद के आत्म-बलिदान में भी आत्मा का अर्थ है - पाशविक स्व (Animal Self) और यहाँ इस स्व का दमन करने का आदेश दिया गया है (कठोरतावाद)। आत्मपूर्णतावाद में आत्म-सिद्धि का अर्थ है संपूर्ण आत्मा- पाशविक और विवेकशील।

→ इस मत के अनुसार समाज की प्रकृति अवयवी (Organic) है, समाज और व्यक्ति का संबंध वैसा ही है, जैसा शरीर का उसके अंगों के साथ। यदि शरीर स्वस्थ है तो अंग भी ~~स्वस्थ है ठीक है~~ स्वस्थ हैं और यदि अंग ठीक है तो शरीर भी। दोनों में कोई विरोध नहीं। व्यक्ति अपने नैतिक आदर्शों को समाज में ही सिद्ध कर सकता है, अतः आदर्श समाज में ही मनुष्य पूर्ण हो सकता है। अतः उच्चतम शुभ वैयक्तिक नहीं, सामान्य शुभ (common good) है।

→ आत्मपूर्णतावाद स्वार्थवाद (Egoism) और परार्थवाद (Altruism) का समन्वय करता है। स्वार्थवाद के अनुसार व्यक्तिगत सुख और सामाजिक सुख में विरोध है। प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत सुख चाहता है। परार्थवाद के अनुसार सामाजिक सुख मनुष्य का आदर्श होना चाहिये। इसके अनुसार भी व्यक्तिगत सुख और सामाजिक सुख में विरोध है। परन्तु आत्मपूर्णतावाद ~~के~~ के अनुसार समाज और व्यक्ति में विरोध का सम्बन्ध नहीं है। इसलिये व्यक्तिगत सुख और सामाजिक सुख विरोधी नहीं हैं। समाज के सुख में ही व्यक्ति का सुख है।

→ आत्मपूर्णतावाद बुद्धिवाद और सुखवाद के झगड़े का अन्त कर देता है। ~~अ~~ इसके अनुसार बुद्धि और कामना दोनों ही मानव स्वभाव का अंग हैं। इसलिये बुद्धि बिना कामना के खोखली है और कामना बिना बुद्धि के अन्धी है। एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। यहाँ संपूर्ण आत्मा का अर्थ मनुष्य की कामना और विवेक दोनों हैं। अतः कामनाओं को बुद्धि के आदेशानुसार तुष्ट करना चाहिये।